



भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों का शास्त्रीय विवेचन

डा॰ राज्यश्री मिश्रा
असिस्टेंट प्रोफेसर संस्कृत,
महात्मा गांधी बालिका विद्यालय (पी.जी.) कालेज फिरोजाबाद

सार

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम और जीवंत संस्कृतियों में से एक है। यह न केवल अपनी दीर्घजीविता और निरंतरता के लिए प्रसिद्ध है, अपितु अपने अद्वितीय, समन्वयकारी और गहरे मूल्यों के लिए भी प्रतिष्ठित है। भारतीय संस्कृति किसी एक विचारधारा या धर्म पर आधारित न होकर अनेक धाराओं, परंपराओं और जीवन पद्धतियों का संगम है। इसके मूल तत्वों को समझने के लिए एक शास्त्रीय विवेचन आवश्यक है, जो इसके दार्शनिक, सामाजिक, धार्मिक और कलात्मक पक्षों को समावेशित करे। भारतीय संस्कृति का मूल आधार आध्यात्मिकता है। यहाँ जीवन का परम लक्ष्य भौतिक सुखों की प्राप्ति न होकर आत्मज्ञान और मोक्ष की प्राप्ति माना गया है। उपनिषदों, वेदों और विभिन्न दार्शनिक प्रणालियों ने इस आध्यात्मिक दृष्टिकोण को पोषित किया है। भारतीय दर्शन का केंद्रीय विचार ब्रह्म (परम सत्य) और आत्मा (व्यक्तिगत चेतना) की एकता है। यह मान्यता जीवन के प्रति एक समग्र और एकात्मवादी दृष्टिकोण प्रदान करती है। कर्म का सिद्धांत, जो यह कहता है कि प्रत्येक क्रिया का परिणाम होता है, और पुनर्जन्म का सिद्धांत, जो आत्मा की अमरता और विभिन्न योनियों में उसके आवागमन को स्वीकार करता है, भारतीय जीवनशैली और नैतिक मूल्यों को गहराई से प्रभावित करते हैं। जीवन का अंतिम लक्ष्य जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति, अर्थात् मोक्ष प्राप्त करना है। इसके लिए विभिन्न मार्ग बताए गए हैं, जैसे ज्ञान योग, भक्ति योग और कर्म योग।

मुख्य शब्द

भारतीय, संस्कृति, विश्व, प्राचीन

प्रस्तावना

भारतीय समाज ऐतिहासिक रूप से वर्ण व्यवस्था पर आधारित रहा है, जिसने श्रम विभाजन और सामाजिक दायित्वों को निर्धारित किया। हालांकि, आधुनिक भारत में यह व्यवस्था कानूनी रूप से समाप्त हो गई है, लेकिन इसके कुछ प्रभाव आज भी समाज में देखे जा सकते हैं। भारतीय संस्कृति में परिवार और समुदाय का अत्यधिक महत्व है। व्यक्ति की पहचान और सुरक्षा परिवार और सामाजिक समूहों से जुड़ी होती है। संयुक्त परिवार प्रणाली, हालांकि अब कम हो रही है, पारंपरिक भारतीय समाज का एक महत्वपूर्ण अंग थी।

पश्चिमी संस्कृतियों में अधिकारों पर अधिक बल दिया जाता है, जबकि भारतीय संस्कृति में कर्तव्यों (धर्म) का पालन महत्वपूर्ण माना जाता है। व्यक्ति से अपने सामाजिक और पारिवारिक दायित्वों को निष्ठा से निभाने की अपेक्षा की जाती है। अतिथि को देवता के समान मानने की परंपरा भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण मूल्य है। यह आतिथ्य सत्कार और दूसरों के प्रति सम्मान की भावना को दर्शाता है। अहिंसा परमो धर्म: और सहिष्णुता (विभिन्न मतों और विचारों के प्रति सम्मान) भारतीय संस्कृति के महत्वपूर्ण नैतिक सिद्धांत हैं।

भारत अनेक धर्मों की जन्मभूमि और संगम स्थली रहा है। हिन्दू धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म और सिख धर्म यहीं विकसित हुए। इसके अतिरिक्त, इस्लाम और ईसाई धर्म भी यहाँ सदियों से मौजूद हैं। यह सबसे प्राचीन धर्मों में से एक है और विभिन्न देवी-देवताओं, दर्शनों और परंपराओं का एक जटिल समूह है। वेदों, उपनिषदों, पुराणों और रामायण-महाभारत जैसे ग्रंथों का भारतीय संस्कृति के संवर्द्धन में महत्वपूर्ण स्थान है। ये धर्म अहिंसा, त्याग और आत्म-अनुशासन पर बल देते हैं और भारतीय दर्शन और नैतिकता को गहराई से प्रभावित करते हैं। यह एकेश्वरवादी धर्म सेवा, न्याय और समानता के सिद्धांतों पर आधारित है। भारतीय संस्कृति में विभिन्न धर्मों के प्रति सहिष्णुता और समन्वय की भावना रही है। 'सर्व धर्म समभाव' (सभी धर्म समान हैं) का विचार यहाँ व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है।

भारतीय कला और स्थापत्य अपनी विविधता, जटिलता और आध्यात्मिक गहराई के लिए जाने जाते हैं। सिंधु घाटी सभ्यता से लेकर आधुनिक काल तक, भारतीय मूर्ति कला में धार्मिक और सांस्कृतिक विषयों का चित्रण मिलता है। विभिन्न शैलियों और सामग्रियों का उपयोग किया गया है। भित्ति चित्रकला (जैसे अजंता की गुफाएँ), लघु चित्रकला और आधुनिक कला भारतीय चित्रकला की समृद्ध परंपरा को दर्शाते हैं।

मंदिरों, महलों, स्तूपों और मस्जिदों का निर्माण भारतीय स्थापत्य का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। विभिन्न राजवंशों और धार्मिक परंपराओं ने अपनी अनूठी शैलियों का विकास किया है। भारतीय शास्त्रीय संगीत (हिंदुस्तानी और कर्नाटक) और विभिन्न लोक नृत्यों की समृद्ध परंपरा है। ये कला रूप न केवल मनोरंजन के साधन हैं, बल्कि आध्यात्मिक अभिव्यक्ति और सामाजिक रीति-रिवाजों का भी अंश हैं।

भारत भाषाओं और साहित्य की एक विशाल विविधता का देश है। संस्कृत, पाली, प्राकृत जैसी प्राचीन भाषाओं से लेकर आधुनिक भारतीय भाषाओं तक, यहाँ ज्ञान और संस्कृति का एक समृद्ध भंडार विद्यमान है। वेद, उपनिषद, आरण्यक और ब्राह्मण भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल स्रोत हैं। रामायण और महाभारत भारतीय संस्कृति के दो महान महाकाव्य हैं, जो नैतिकता, धर्म और सामाजिक मूल्यों की शिक्षा देते हैं। कालिदास, भास और अन्य कवियों और नाटककारों ने संस्कृत साहित्य को समृद्ध किया। विभिन्न क्षेत्रों में लोक कथाएँ, गीत और गाथाएँ भारतीय संस्कृति की विविधता और जीवंतता को दर्शाती हैं।

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है और इसकी नींव आध्यात्मिकता पर टिकी हुई है। यह न केवल एक जीवन शैली है, बल्कि एक दर्शन है जो मनुष्य को स्वयं, प्रकृति और ब्रह्मांड के साथ अपने संबंध को समझने की गहरी अंतर्दृष्टि प्रदान करती है। भारतीय संस्कृति का आध्यात्मिक आधार इतना मजबूत है कि सदियों के उतार-चढ़ाव के बावजूद, यह आज भी जीवित और जीवंत है।

साहित्य की समीक्षा

भारतीय संस्कृति के मूल में वेदों, उपनिषदों, पुराणों और अन्य धार्मिक ग्रंथों का गहरा प्रभाव है। ये ग्रंथ जीवन के गूढ़ प्रश्नों, जैसे कि आत्मा, परमात्मा, कर्म, मोक्ष आदि पर विस्तृत विचार प्रस्तुत करते हैं। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का महान आदर्श, जिसका अर्थ है 'सारा विश्व एक परिवार है', भारतीय संस्कृति के आध्यात्मिक दृष्टिकोण का सार है। यह सिखाता है कि सभी जीव एक ही दिव्य चेतना का हिस्सा हैं और इसलिए सभी के प्रति करुणा और सम्मान का भाव रखना चाहिए। [1]

भारतीय संस्कृति में धर्म को केवल पूजा-पाठ या कर्मकांडों तक सीमित नहीं माना जाता है, बल्कि इसे जीवन के हर पहलू में व्याप्त एक नैतिक और आध्यात्मिक मार्गदर्शक के रूप में देखा जाता है। सत्य, अहिंसा, अस्तेय (चोरी न करना), अपरिग्रह (आवश्यकता से अधिक संग्रह न करना) और ब्रह्मचर्य जैसे नैतिक मूल्यों को व्यक्ति और समाज दोनों के लिए आवश्यक माना जाता है। ये मूल्य व्यक्ति को आत्म-संयम, आंतरिक शांति और

दूसरों के साथ सद्भावपूर्ण संबंध बनाने में मदद करते हैं। मनु ने भी कहा है कि अहिंसा सत्य दमः शौच दान ज्ञान च धर्माः [2]

योग और ध्यान भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग हैं, जो आध्यात्मिक विकास और आत्म-ज्ञान की प्राप्ति के महत्वपूर्ण साधन हैं। योग न केवल शारीरिक व्यायाम है, बल्कि यह मन, शरीर और आत्मा के बीच संतुलन स्थापित करने की एक समग्र प्रक्रिया है। योग दर्शन के अनुसार चित्त वृत्ति निरोधः योगः [3] ध्यान मन को शांत और स्थिर करने, एकाग्रता बढ़ाने और अंततः अपनी आंतरिक प्रकृति को जानने में सहायक होता है। भारतीय संस्कृति में प्रकृति की पूजा का भी महत्वपूर्ण स्थान है। नदियों, पहाड़ों, वृक्षों और जानवरों को पवित्र माना जाता है और उनका सम्मान किया जाता है। यह दृष्टिकोण प्रकृति के साथ मनुष्य के गहरे और परस्पर निर्भर संबंध को दर्शाता है। पर्यावरण संरक्षण और सभी जीवों के प्रति सम्मान की भावना भारतीय आध्यात्मिक दर्शन का स्वाभाविक परिणाम है। ऋग्वेद का नदि सूक्त और पृथ्वी सूक्त तथा अथर्ववेद का अन्यानी सूक्त क्रमशः नदियों पृथ्वी एवम वनस्पतियों के संरक्षण एवम संवर्धन की कामना का सन्देश देते हैं। यदपिडे तद ब्रमंडे सूक्तिभी पुरुष तथा प्रकृति के मध्य संबंध की विज्ञानपुष्ट अवधारणा को बताती है [4]

भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों का शास्त्रीय विवेचन

भारतीय संस्कृति का आध्यात्मिक आधार अत्यंत गहरा और व्यापक है। यह जीवन के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित करता है और व्यक्ति को एक सार्थक और उद्देश्यपूर्ण जीवन जीने का मार्ग दिखाता है। यह न केवल भारत की पहचान है, बल्कि यह पूरे विश्व के लिए शांति, सद्भाव और आध्यात्मिक विकास का एक शाश्वत स्रोत है। आज के भौतिकवादी युग में, भारतीय संस्कृति के आध्यात्मिक मूल्यों का महत्व और भी बढ़ जाता है, क्योंकि यह हमें आंतरिक शांति, संतोष और सभी के साथ एकता की भावना की ओर ले जाता है।

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम और जीवंत संस्कृतियों में से एक है। सहस्राब्दियों के इतिहास में विकसित हुई यह संस्कृति अपनी अनूठी सामाजिक संरचना और गहरे मूल्यों के लिए जानी जाती है। इसकी जटिलता और विविधता में ही इसकी शक्ति निहित है, जो इसे बदलते समय के साथ अनुकूलित होने और अपनी पहचान बनाए रखने में सक्षम बनाती है।

विभिन्न धर्मों और आध्यात्मिक परंपराओं का सह-अस्तित्व भारतीय संस्कृति की एक अनूठी विशेषता है। हिन्दू धर्म के साथ-साथ बौद्ध धर्म, जैन धर्म, सिख धर्म और अन्य स्थानीय परंपराएं शांति और सद्भाव के साथ सदियों

से यहां फल-फूल रही हैं। यह सहिष्णुता और समावेश की भावना भारतीय संस्कृति के आध्यात्मिक आधार को और भी मजबूत करती है। कहा भी गया है सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामयः अर्थात् सभी लोग सुखी रहे, सभी स्वस्थ रहे, सभी अच्छे कार्यों के साक्षी बने, कोई दुख का भागी न बने। [4]

भारतीय समाज की पारंपरिक संरचना मुख्य रूप से जाति व्यवस्था पर आधारित रही है। यह व्यवस्था, जो ऐतिहासिक रूप से व्यवसायों और सामाजिक दायित्वों के विभाजन पर आधारित थी, समय के साथ कठोर और जन्मजात बन गई। इसने समाज को विभिन्न सोपानों में विभाजित किया, जिसमें प्रत्येक समूह के अपने विशिष्ट अधिकार और कर्तव्य थे। हालांकि आधुनिक भारत में जातिगत भेदभाव को कानूनी रूप से समाप्त कर दिया गया है और शहरीकरण, शिक्षा और सामाजिक आंदोलनों के कारण इसकी पकड़ कमजोर हुई है, फिर भी ग्रामीण क्षेत्रों और सामाजिक व्यवहार में इसके अवशेष आज भी देखे जा सकते हैं।

जाति व्यवस्था के अतिरिक्त, परिवार भारतीय सामाजिक संरचना की एक महत्वपूर्ण इकाई है। पारंपरिक रूप से, संयुक्त परिवार प्रणाली प्रचलित रही है, जिसमें कई पीढ़ियों के सदस्य एक साथ रहते हैं और साझा संपत्ति, रसोई और जिम्मेदारियों को साझा करते हैं। यह प्रणाली पारंपरिक सहयोग, वृद्धजनों के सम्मान और पारिवारिक एकता के मूल्यों को बढ़ावा देती है। यद्यपि, पश्चिमीकरण और एकल परिवार के बढ़ते चलन के कारण, संयुक्त परिवार प्रणाली में बदलाव आ रहा है, लेकिन परिवार का महत्व आज भी भारतीय समाज में सर्वोपरि है।

भारतीय समाज में ग्राम समुदाय का भी एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है। ऐतिहासिक रूप से, गांव आत्मनिर्भर इकाइयाँ थे, जिनमें सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन आपस में गुंथा हुआ था। पंचायत प्रणाली, जो गांवों में स्वशासन की एक पारंपरिक व्यवस्था है, आज भी कुछ हद तक प्रासंगिक है। शहरीकरण के बढ़ते प्रभाव के बावजूद, गांव भारतीय संस्कृति की जड़ों को दर्शाते हैं और सामुदायिक भावना को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

भारतीय संस्कृति अनेक मूल्यों पर आधारित है जो पीढ़ियों से चले आ रहे हैं और सामाजिक जीवन को दिशा प्रदान करते हैं। इनमें अहिंसा (किसी भी जीव को हानि न पहुँचाना), सत्य (सच्चाई का पालन करना), अस्तेय (चोरी न करना), ब्रह्मचर्य (इंद्रिय संयम) और अपरिग्रह (आवश्यकता से अधिक संग्रह न करना) जैसे नैतिक मूल्य शामिल हैं। ये मूल्य व्यक्तिगत आचरण और सामाजिक संबंधों को नियंत्रित करते हैं।

धर्म भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न अंग है और इसके मूल्यों को गहराई से प्रभावित करता है। हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म और सिख धर्म जैसे प्रमुख धर्मों ने सहिष्णुता, करुणा, सेवा और कर्म के सिद्धांत जैसे मूल्यों को बढ़ावा दिया है। धार्मिक ग्रंथों, त्योहारों और अनुष्ठानों के माध्यम से ये मूल्य समाज में पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होते रहते हैं।

कर्म का सिद्धांत भारतीय मूल्यों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह सिद्धांत मानता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मों (कार्यों) के अनुसार फल भोगता है, चाहे वह इस जन्म में हो या अगले जन्मों में। यह सिद्धांत व्यक्तियों को अपने कार्यों के प्रति जिम्मेदार बनाता है और नैतिक आचरण को प्रोत्साहित करता है। मोक्ष (मुक्ति) भारतीय दर्शन का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य है। यह जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति की अवस्था है। विभिन्न आध्यात्मिक मार्ग और अभ्यास मोक्ष की प्राप्ति के लिए बताए गए हैं, जो भारतीय संस्कृति में आध्यात्मिक खोज के महत्व को दर्शाता है।

अतिथि देवो भवः (अतिथि भगवान के समान है) भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण मूल्य है जो आतिथ्य और मेहमान नवाजी को अत्यधिक महत्व देता है। यह मूल्य सामाजिक संबंधों को मजबूत करता है और सामुदायिक भावना को बढ़ावा देता है। हालांकि भारतीय संस्कृति अपनी समृद्ध विरासत और मूल्यों के लिए जानी जाती है, लेकिन यह समय के साथ बदलावों से अछूती नहीं रही है। पश्चिमीकरण, वैश्वीकरण और तकनीकी प्रगति ने भारतीय समाज और मूल्यों पर गहरा प्रभाव डाला है। शहरीकरण, शिक्षा के प्रसार और महिलाओं की बढ़ती भूमिका ने पारंपरिक सामाजिक संरचनाओं में बदलाव लाए हैं। उपभोक्तावाद और भौतिकवाद जैसे पश्चिमी मूल्यों का प्रभाव भी भारतीय जीवन शैली और मूल्यों पर देखा जा सकता है।

भारतीय संस्कृति अपनी मूल पहचान और मूल्यों को बनाए रखने के लिए संघर्ष कर रही है। परिवार का महत्व, धार्मिक आस्था, नैतिक मूल्यों और सामुदायिक भावना आज भी भारतीय समाज के महत्वपूर्ण पहलू हैं। भारतीय संस्कृति की यह क्षमता कि वह नए विचारों को आत्मसात करते हुए अपनी जड़ों से जुड़ी रहे, इसे एक अद्वितीय पहचान प्रदान करती है। निष्कर्षतः, भारतीय संस्कृति एक जटिल और गतिशील प्रणाली है जो अपनी प्राचीन सामाजिक संरचना और गहरे मूल्यों के लिए जानी जाती है। जाति व्यवस्था, परिवार और ग्राम समुदाय इसकी पारंपरिक संरचना के महत्वपूर्ण स्तंभ रहे हैं। अहिंसा, सत्य, कर्म, धर्म और आतिथ्य जैसे मूल्यों ने सामाजिक जीवन को दिशा प्रदान की है। हालांकि आधुनिकता के प्रभाव से बदलाव आ रहे हैं, भारतीय

संस्कृति अपनी विशिष्ट पहचान और मूल्यों को बनाए रखने के लिए लगातार अनुकूलन कर रही है। इसकी विविधता और लचीलापन ही इसे विश्व की महानतम संस्कृतियों में से एक बनाता है।

भारत एक ऐसा देश है जहाँ सदियों से विभिन्न धर्मों और आस्थाओं का संगम रहा है। यह भूमि न केवल हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म और सिख धर्म जैसे प्रमुख धर्मों की जन्मस्थली है, बल्कि इसने इस्लाम, ईसाई धर्म, पारसी धर्म और यहूदी धर्म जैसे कई अन्य धर्मों को भी खुले दिल से स्वीकार किया है। इस धार्मिक विविधता के बावजूद, भारतीय संस्कृति में एक अद्भुत समन्वय और सहिष्णुता की भावना निहित है, जो इसे विश्व में अद्वितीय बनाती है।

भारत की धार्मिक विविधता का मूल प्राचीन काल से ही मिलता है। सिंधु घाटी सभ्यता से लेकर वैदिक काल और उसके बाद के युगों में, विभिन्न धार्मिक और दार्शनिक विचारधाराओं का विकास हुआ। हिंदू धर्म, अपने विशाल और जटिल स्वरूप के साथ, विभिन्न देवी-देवताओं, परंपराओं और दर्शनों को समाहित करता है। बौद्ध धर्म और जैन धर्म, जो हिंदू धर्म से ही विकसित हुए, ने अहिंसा, करुणा और आत्म-अनुशासन के सिद्धांतों पर जोर दिया। सिख धर्म, गुरु नानक देव द्वारा स्थापित, एकेश्वरवाद और सेवा के महत्व को प्रतिपादित करता है।

भारत में विदेशी धर्मों का भी आगमन हुआ। इस्लाम, सदियों के व्यापार और शासन के माध्यम से, भारतीय समाज का एक अभिन्न अंग बन गया। ईसाई धर्म, मिशनरियों और औपनिवेशिक शासन के माध्यम से, देश के विभिन्न हिस्सों में फैल गया। पारसी धर्म, फारस से आए शरणार्थियों द्वारा लाया गया, ने भी भारतीय संस्कृति में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाया।

इस व्यापक धार्मिक विविधता के बावजूद, भारत ने हमेशा समन्वय और सहिष्णुता की भावना को पोषित किया है। विभिन्न धर्मों के अनुयायियों ने शांति और सद्भाव से एक साथ रहने की कला सीखी है। विभिन्न धार्मिक समुदायों के लोग एक-दूसरे के रीति-रिवाजों, त्योहारों और परंपराओं का सम्मान करते हैं। कई अवसरों पर, वे एक-दूसरे के साथ मिलकर जश्न मनाते हैं और सामाजिक जीवन में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं।

भारतीय कला, साहित्य, संगीत और वास्तुकला में विभिन्न धार्मिक प्रभावों का स्पष्ट मिश्रण दिखाई देता है। मंदिरों, मस्जिदों, चर्चों और गुरुद्वारों की स्थापत्य शैली में अक्सर स्थानीय सांस्कृतिक तत्वों का समावेश होता

है। भारतीय दर्शन में भी विभिन्न धार्मिक और दार्शनिक विचारों का आदान-प्रदान हुआ है। कई संत और विद्वान हुए हैं जिन्होंने विभिन्न धर्मों के बीच समानता और एकता के संदेश को फैलाया है।

भारत की धार्मिक विविधता और समन्वय की यह भावना इसके संविधान में भी परिलक्षित होती है। भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है, जहाँ सभी धर्मों को समान सम्मान और सुरक्षा प्राप्त है। प्रत्येक नागरिक को अपनी पसंद के धर्म का पालन करने और उसका प्रचार करने की स्वतंत्रता है। हालांकि, यह स्वीकार करना महत्वपूर्ण है कि भारत में धार्मिक सद्भाव हमेशा निर्बाध नहीं रहा है। समय-समय पर सांप्रदायिक तनाव और हिंसा की घटनाएं हुई हैं। इन चुनौतियों के बावजूद, भारत की अंतर्निहित समन्वयवादी भावना और बहुलवादी लोकाचार ने हमेशा समाज को एकजुट रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

भारतीय संस्कृति अपनी धार्मिक विविधता और समन्वय की अनूठी क्षमता के लिए जानी जाती है। यह एक ऐसा देश है जहाँ विभिन्न धर्मों के लोग सदियों से एक साथ रहते आए हैं, एक-दूसरे की परंपराओं का सम्मान करते हैं और एक साझा सांस्कृतिक विरासत का निर्माण करते हैं। यह समन्वय और सहिष्णुता की भावना न केवल भारत की ताकत है, बल्कि यह विश्व के लिए भी एक महत्वपूर्ण संदेश है कि विविधता में एकता संभव है।

निष्कर्ष

भारतीय संस्कृति एक बहुरंगी और जटिल चित्रपट है, जिसके मूल तत्वों में आध्यात्मिकता, सामाजिक सामंजस्य, धार्मिक सहिष्णुता, कलात्मक समृद्धि और भाषाई विविधता शामिल हैं। इसका शास्त्रीय विवेचन हमें इसकी गहराई, निरंतरता और मानव सभ्यता के लिए इसके अद्वितीय योगदान को समझने में मदद करता है। समय के साथ इसमें परिवर्तन आए हैं, लेकिन इसके मूल मूल्य आज भी भारतीय समाज और जीवनशैली को किसी न किसी रूप में प्रभावित करते हैं। भारतीय संस्कृति न केवल अतीत का गौरव है, बल्कि भविष्य के लिए भी एक प्रेरणा स्रोत है, जो विविधता में एकता और सह-अस्तित्व का संदेश देती है।

संदर्भ

1. ईशावास्योपनिषद्/1
2. मनुस्मृति 2/12

3. पातजल योगसूत्र
4. वृहदारण्यक उपनिषद्
5. डॉ किरण टंडन भारतीय संस्कृति (1994) ईस्टर्न बुक लिंकर्स प्रकाशन
6. भारतीय दर्शन की समीक्षात्मक रूपरेखा राम मूर्ति पाठक (1997) अभिमन्यु प्रकाशन इलाहाबाद
7. प्राचीन भारतीय संस्कृति, डॉ. वीरेंद्र कुमार सिंह
8. मनुस्मृति, रामेश्वर भट्ट चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी
9. लूनिया (2010), प्राचीन भारतीय संस्कृति, अग्रवाल प्रकाशन